News item/letter/article/editorial published on 7/5/15 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

जोधपुर, पाली, सीकर, बीकानेर, अलवर, बाड़मेर, नागौर और गंगानगर संस्करणों से...

जल थोड़ा, किल्लत बड़ी... भीषण गर्मी में पशुओं सहित ग्रामीणों के लिए पर्याप्त पेयजल नहीं मिल रहा है। बुधवार को पाली जिले के रोहट पंचायत समिति क्षेत्र के खुटानी गांव के तालाब में बने एक गड्ढे में जमा खारे व मटमैले पानी को घड़ों में भरती ग्रामीण महिलाएं तथा घड़े भरकर कतारबद्ध आती महिलाएं। फोटोः सुरेश हेमनानी

News item/letter/article/editorial published on 7/5/15 in the

Hindustan Times	Nav Bharat Times (Hindi)	M.P.Chronicle
Statesman	Punjab Keshari (Hindi)	A a j (Hindi)
The Times of India (N.D.)	The Hindu	Indian Nation
Indian Express	Rajasthan Patrika (Hindi)	Nai Duniya (Hindi)
Tribune	Deccan Chronicle	The Times of India (A)
Hindustan (Hindi)	Deccan Herald	Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

यमुना नगर में मिले सरस्वती के निशान

चंडीगढ़ @ पत्रिका . हरियाणा के यमुना नगर के आदिबद्री से पांच किमी दूर मुगलवाली गांव में सरस्वती नदी की खुदाई के दौरान बड़ी सफलता हाथ लगी। खुदाई करने वाले मुस्लिम दम्पती सलमा और रफीक के फावड़े से महज सात फीट पर ही पानी फूट पड़ा। उपायुक्त डॉ. एसएस फूलिया ने कहा कि सरस्वती नदी का जिक्र पुराणों में मिलता था, जो आज धरती पर अवतरित हो गई। इक्कीस अप्रेल को मनरेगा के तहत खुदाई शुरू की गई।

News item/letter/article/editorial published on 7/5/15 in the

Hindustan Times	Nav Bharat Times (Hindi)	M.P.Chronicle
Statesman	Punjab Keshari (Hindi)	A a j (Hindi)
The Times of India (N.D.)	The Hindu	Indian Nation
Indian Express	Rajasthan Patrika (Hindi)	Nai Duniya (Hindi)
Tribune	Deccan Chronicle	The Times of India (A)
Hindustan (Hindi)	Deccan Herald	Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

हिं-7-5-15

दिल्ली में बुधवार सबसे गर्म दिन

नई दिल्ली। दिल्ली में बुधवार मौसम का सबसे गर्म दिन रहा। यहां अधिकतम पारा 42.7 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से चार डिग्री अधिक है। न्यूनतम तापमान 24.5 डिग्री रहा। गुरुवार को पारा 43 डिग्री तक जा सकता है।

पूरे उत्तर भारत में बुधवार को गर्म हवाएं चलती रहीं। दिल्ली में इससे पहले मंगलवार को तापमान 40.8 डिग्री दर्ज किया गया था। मौसम विभाग के अनुसार पाकिस्तान से आने वाली गर्म हवाएं उत्तर भारत का तापमान बढ़ा रही हैं। वहीं, राजस्थान में जोधपुर जिले के फलौदी में पारा 47 डिग्री को छू गया।

हरियाणा और पंजाब में भी गर्म हवाओं का असर देखने को मिला। हिसार में तापमान सामान्य से एक डिग्री अधिक 43.8 डिग्री रहा जबकि नरनौल में 42 डिग्री तापमान रहा। **(हिंदी)**

The Times of India (N.D.) | The Hindu | Indian Nation
Indian Express | Rajasthan Patrika (Hindi) | Nai Dunia (Hindi)
Tribune | Deccan Chronicle | The Tir
Hindustan (Hindi) | Deccan Herald | Blitz
and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

हिन्दुस्तान • नई दिल्ली • गुरुवार • 07 मई 2015 • 10

ताकि गंगा अविरल बहती रहे

मृत्यु के बाद गंगा में पार्थिव शरीर के भस्म का विलीन होना एक अंतिम अभिलाषा होती है। अब वही गंगा अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही है।

कलराज मिश्र
केंद्रीय मंत्री

गंगा भारत की जीवनधारा है। यह केवल नदी नहीं, भारत की आस्था, संस्कृति, परंपरा, सभ्यता का स्वर्णिम इतिहास, है। विशाल जलराशि को समेटे गंगा भारत की शाश्वत पहचान, आजीविका का उपक्रम और मर्यादा है। सुदूर ऊंचे हिमनदों से ढके हिमालय के गंगोत्री से निकलकर बंगाल की खाड़ी में समा जाने वाल गंगा की कथा एक दारूण गाथा है। करीब 2,510 किलोमीटर की यात्रा में भारत के पांच राज्यों उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड और पश्चिम बंगाल से गुजरती हुई वह भारत की 40 प्रतिशत आबादी को जीवन देती है। हिंदुओं के लिए विशेष रूप से वंदनीय गंगा जीवन के प्रत्येक प्रसंग से जुड़ी है। मृत्यु के ठीक पूर्व गंगाजल की कुछ बूंदें मुंह में डालना मोक्ष का पर्याय हैं। मृत्यु उपरांत गंगा में पार्थिव शरीर के भस्म का विलीन होना अंतिम अभिलाषा होती है। अब वही गंगा अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही है।

चित्रांकन : अतुल वर्धन

आज गंगा विश्व की छठी सर्वाधिक प्रदूषित नदी है। गंगा के कछारी क्षेत्र में कृषि कार्य में उपयोग होने वाले उर्वरकों की मात्रा सौ लाख टन है, जिसका पांच लाख टन बहकर गंगा में मिल जाता है। साथ ही, करीब 1,500 टन कीटनाशक भी मिलते हैं। सैकड़ों टैनरीज व रसायन कारखानों, कपड़ा मिलों, डिस्टलरियों, बूचड़खानों, अस्पतालों और अन्य फैक्टरियों का निकला द्रव्य गंगा में मिलता है। नगरों और मानवीय क्रिया-कलापों से निकली गंदगी, जैसे नहाने-धोने, पूजा-पूजन सामग्री, मूर्ति विसर्जन और दाह संस्कार से निकला प्रदूषण गंगा में समा जाता है। भारत में गंगा तट पर बसे छोटे-बड़े सैकड़ों नगरों का 1,100 करोड़ लीटर अपशिष्ट प्रतिदिन गंगा में गिरता है। इसका कितना भाग शोधित होता होगा, इसकी कोई प्रामाणिक जानकारी नहीं है। इसलिए 2020 तक गंगा को प्रदूषण मुक्त करने का लक्ष्य एक बहुत बड़ी चुनौती है।

गंगा में प्रदूषण उद्योगों से 80 प्रतिशत, नगरों से 15 प्रतिशत तथा आबादी, पर्यटन व धार्मिक कर्मकांड से पांच प्रतिशत होता है। आबादी की बाढ़ के साथ, पर्यटन, नगरीकरण और उद्योगों के विकास ने प्रदूषण के स्तर को आठ गुना बढ़ाया है। जब ऋषिकेश में गंगा पहाड़ों से उतरकर मैदान में आती है, तो उसी के साथ उसमें प्रदूषण की शुरुआत हो जाती है। धार्मिक पर्यटन, पूजा-पाठ, मोक्ष और मुक्ति की धारणा ने गंगा को प्रदूषित करना शुरू किया। हरिद्वार के पहले ही गंगा का पानी निचली गंगा नहर के जरिये उत्तर प्रदेश को सींचता है। नरौरा के परमाणु संयंत्र से गंगा के पानी का उपयोग और रेडियोधर्मिता के खतरे इसके गंभीर आयाम हैं। प्रदूषण की चरम स्थिति कानपुर में पहुंच जाती है। चमड़ा शोधन और उससे निकला प्रदूषण सबसे गंभीर है। उस समूचे क्षेत्र में गंगा के पानी के साथ भूमिगत जल भी गंभीर रूप से प्रदूषित है। इलाहाबाद में यमुना, गंगा से मिल जाती है। पवित्र संगम, यहां होने वाले स्नान और कुंभ मेले आस्था के बहुत बड़े केंद्र हैं, मगर करोड़ों लोगों के स्नान, शवदाह, पिंडदान और अस्थि विसर्जन के कारण गंगा का प्रदूषण सभी मान्य सीमाएं पार कर जाता है। वाराणसी में प्रतिवर्ष 35,000 और अन्य गंगा तटों पर दो लाख से अधिक शवों का अंतिम संस्कार होता है। हजारों शवदाह, आधे जले शवों को नदी में बहाना एक अन्य गंभीर समस्या है। गंगा तटों पर इस प्रदूषण से मुक्ति के लिए विद्युत शवदाह एक अच्छा तथा ईको-फ्रेंडली विकल्प है। हमारी धार्मिक मान्यताएं, विश्वास, परंपरा और मृतक से भावनात्मक संबंध विद्युत शवदाह में असमंजस पैदा करते हैं। अतः मोक्ष, मुक्ति और परम शांति के अर्थों को फिर से परिभाषित करना होगा।

पर्यटन, बेतरतीब निर्माण, पनबिजली योजनाएं और बांधों के निर्माण से समूचा हिमालय क्षेत्र अति संवेदनशील हो चुका है। नदियों के मार्ग, नदी के तट में अवरोध, पहाड़ियों पर बारूदी विस्फोट और सड़कों, सुरंगों के निर्माण से स्थितियां बद से बदतर हुई हैं। 557 बांध परियोजनाएं प्रस्तावित हैं, यदि वे क्रियान्वित हुईं, तो हिमाचल, गंगा और उत्तराखंड का पर्यावरणीय विनाश तय है। गंगा बहती है, इसलिए नदी है। अविरल है। नदी का बहना बंद होने का अर्थ है उसकी मृत्यु। बांधों का निर्माण जैव विविधता की क्षति के साथ वनों का विनाश लाता है। ये भूकंप, भूस्खलन, भूक्षरण के साथ पूरे क्षेत्र को आपदाओं में झोंक देते हैं।

आज गंगा के अस्तित्व और भविष्य पर बेशुमार संकट हैं। हमारी गलत नीतियों और करतूतों ने हालात को और भी बदतर बना दिया। 1979 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने गंगा में प्रदूषण की विकरालता को समझते हुए एक समीक्षा की थी। 1985 में गंगा एक्शन प्लान का प्रारंभ हुआ, पर गंगा की हालत नहीं बदली। गंगा बेसिन अथॉरिटी की स्थापना 2009 में हुई, पर नतीजे नहीं मिले। 2014 में नमामि गंगे परियोजना की घोषणा हुई है। इसके अंतर्गत 2,037 करोड़ रुपये खर्च होंगे। इसके किनारे के बड़े नगरों में घाटों के विकास पर 100 करोड़ रुपये खर्च होंगे। गंगा के प्रवाह को जल परिवहन के लिए भी उपयोग करने की योजना है। इलाहाबाद से हल्दिया तक जलमार्ग विकास परियोजना। 42,000 करोड़ रुपये की योजना साल 2020 तक पूरी होगी। हालांकि इस जलमार्ग योजना पर अनेक प्रश्न उठाए गए हैं।

अब गंगा को अविरल, निर्मल और पूरी तरह प्रदूषण मुक्त बनाने के लिए भारत सरकार युद्ध स्तर पर सक्रिय हो गई है। जल संसाधनों के साथ 'गंगा' अभियान को उच्च प्राथमिकता पर लिया गया है। पृथक मंत्रालय का बनाना सरकार की गंगा के प्रति गंभीरता का परिचायक है। कई स्तरों पर प्रयास शुरू किए जा रहे हैं। नए एक्शन प्लान में 2022 तक गंगा के किनारे बसे सभी गांवों को 'खुले में शौच' से पूरी तरह मुक्त किए जाने का संकल्प है। राष्ट्रीय गंगा निगरानी केंद्र का गठन एक अन्य पहल है। नदी के किनारों पर नदी नियामक नियमों को सख्ती से लागू करवाना, गंगा ज्ञान केंद्र की स्थापना, जो नदी विज्ञान पर गंगा विश्वविद्यालय जैसी संस्था बनाएगा। जलीय जीवन की सुरक्षा की जा रही है, जिसमें डॉल्फिन, घड़ियाल और कछुए शामिल हैं। बालू खनन पर नए नियम बनाने की बात की गई है। पुनर्वास तथा गंगा के किनारे मौजूद एसटीपीएस का उन्नयन भी एक लक्ष्य है। कानपुर में होने वाले औद्योगिक प्रदूषण के खिलाफ भी सरकार ने कमर कस ली है। यह कोशिश की जा रही है कि गंगा के किनारे पड़ने वाले सभी नगरों में नदी और तटों का विकास हो, जिससे नदी स्वच्छ लगे। राष्ट्र के प्रति कर्तव्य बोध के रूप में गंगा को स्वच्छ, निर्मल और पावन बनाना हमारा दृढ़ निश्चय भी है और संकल्प भी। हमें यह करना ही होगा, ताकि गंगा बहे, बहती रहे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

News item/letter/article/editorial published on 7/5/15 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Mercury hits 42.7°C, but rain just a day away

7/5/15

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: Wednesday was the season's hottest day so far, the day temperature touching 42.7 degrees Celsius, four degrees above normal. The bad news is that the temperatures are expected to rise by a degree or two over the next couple of days. The good news is that Friday onward, the weekend is expected to witness thunderstorms and rain.

"There are clear skies and dry westerly winds over the plains, leading to a rise in temperatures. The day temperature in Delhi almost touched 45 degrees with Delhi University recording 44.8 degrees Celsius, Palam recording 44.1 degrees Celsius and Aya Nagar recording 44 degrees Celsius. These are set to rise by a couple of degrees till Friday," said a Met official.

For Delhiites, who have not yet witnessed a sustained spell of heat this season, the high temperatures were even more difficult to take. "It has been quite warm of late but Wednesday's heat carried on through the day and well into the evening. It is usually slightly pleasant when I leave office in the evening but on Wednesday the heat was as bad as it was in the afternoon and even the air conditioning in the car was not effective," said Mandira Garg, a resident of IP Extension.

By Friday night, a western disturbance is expected to affect the western Himalayan region and the adjoining northwest plains. Between Friday and Sunday, Delhi and neighbouring areas can expect thunderstorms accompanied with squall. On Friday the WD will affect isolated areas over Punjab, Haryana and Delhi but become more widespread over Saturday and Sunday, said a Met official.

This spell of rain is likely to be followed by another one in quick succession. "Another WD is expected to affect the western Himalayan region and the adjoining plains of northwest India from May 11 onwards. Under its influence, rain and thundershowers can occur at many places over the western Himalayan region and at a few places over the adjoining plains," said a Met official.

WEATHER

Max 42.7°C (+4) / Min 24.5°C (-1)
Moonrise: Thursday – 09:58 pm
Moonset: Friday – 08:59 am
Sunset: Thursday - 07:00 pm
Sunrise: Friday - 05:36 am
Mainly clear sky, Maximum & min temperature on Thursday will be around 43°C & 25°C. Max humidity Wednesday was 57% and min 12%

News item/letter/article/editorial published on 7/5/15 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

Rainwater harvesting is nobody's c

Policy Muddle Equally To Blame For Programme's Failure

TIMES NEWS NETWORK

New Delhi: For years the city has drawn more water from the ground than what rain puts back inside. At most places, water is found at more than 50-metre depth. Aware of the approaching crisis, Delhi high court had forced the city government to enforce rainwater harvesting on a large scale. The court regularly monitored progress of the programme and the chief secretary was required to submit a status report every six months. But the last time such a report came was two years ago.

Vinod Jain, director of Tapas, the NGO on whose PIL the court issued the order on rainwater harvesting, says the programme has failed in Delhi because there is no institutional framework to guide it. "Central Ground Water Authority (CGWA) was made the nodal authority but no single agency is responsible for ensuring that it is done. Delhi Jal Board gives permissions for borewells and billing incentives, municipal corporations are supposed to ensure implementation but take no interest, and CGWA does not have staff for monitoring. I will now take the case to National Green Tribunal," he said.

No agency has any information on RWH structures in the city. DJB only has data on permissions granted for borewells. Due to lack of maintenance, many RWH structures are useless. "RWH is pointless if any part of the structure is blocked, or pollutants are going into it," said Jyoti Sharma, director of Force, another NGO. "Lack of maintenance has rendered many RWH structures useless. Also, unless RWH is done across the city its benefits are limited," she added.

But Sushmita Sengupta from Centre for Science and Environment says maintaining a harvesting structure is extremely easy. "We have about 17 structures at CSE and spend just about Rs 1,000 to maintain them every year."

There's no clear policy on RWH. In 2001, the urban development ministry made rainwater harvesting mandatory for any structure occupying 100 sqm land or more.

But the current master plan allows 90% ground coverage for such plots, leaving hardly any space for RWH structures. Last year, the environment department found that many people dig up pits claiming that they will harvest rainwater but actually withdraw ground water.

Many experts say it is best to build these structures at the colony level, or in parks, flyovers and wetlands. Manu Bhatnagar, who heads the natural heritage division of conservation body Intach, said RWH structures should be sturdy. "The design is often not right. Large volumes of water pass through narrow pipes which get clogged in no time." He gave the example of check dams in Sanjay Van that have helped recharge an old well. "The water table is at 60-70m in that area but we found water at 4m in the well. The Hauz Khas Lake has probably managed to put around 1,000 million litres of water into the ground. Wetlands are equally important recharge zones."

LET IT FLOW

Rainwater harvesting potential in Delhi

60 million cubic metres*
(1m³=1,000 litres)

That's **3,500 litres or 13 days'** average water availability per person

But hardly any rainwater is saved. Delhi Metro has water harvesting systems at **63 stations**

Source: Groundwater recharge strategy for Delhi submitted to DJB

LET'S DEPEND ON NATURE

The best way to harvest rainwater is to rejuvenate dead wetlands, storm water drains and irrigation canals. Conservation body Intach claims Hauz Khas Lake has recharged **800 million litres** of groundwater in nine years

WHAT RESIDENTS CAN DO

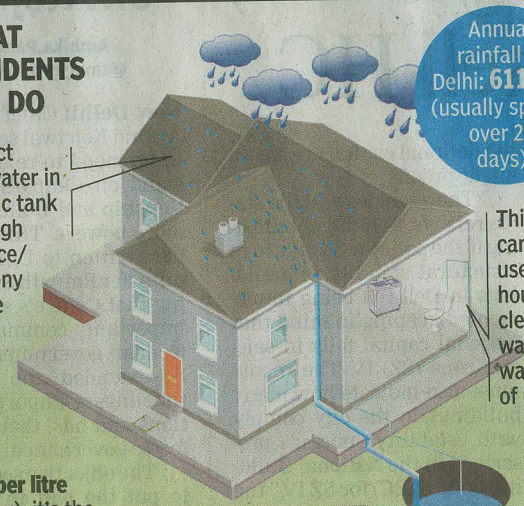

Underground recharge wells or pits can be developed in areas where groundwater is scarce. Rainwater from roof will flow directly into it. Drilling a 2-3m³ well will cost ₹50,000-75,000. A smaller pit of about 2-3ft³ will cost ₹8,000-10,000

News item/letter/article/editorial published on 11/5/15 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

'South Asia suffers more during quakes due to poor infrastructure'

Interview with geologist **Michael P. Searle**, who, two years ago, predicted a disaster in Nepal

'Kathmandu is a disaster waiting to happen. We don't know when, but an earthquake will definitely happen at some stage. It might be tomorrow, it might be 10 years, it might be 100 years; but when it happens, it will be devastating," Michael P. Searle, Professor of Earth Sciences at Oxford University, had stated in 2013 in an interview with **Shubhangi Swarup**.

One of the leading geologists working in the Himalayas, Professor Searle is the author of Colliding Continents: A Geological Exploration of the Himalaya, Karakoram and Tibet. *The book documents over 30 years of field experience ranging from Oman and Indonesia to various other seismically unstable regions. In the aftermath of the earthquake that hit Nepal on April 25, 2015, Professor Searle explains the nature of the quake and its relevance in a larger narrative of continents, oceans and an ever restless earth that fuels it all. Excerpts:*

PICKING UP THE PIECES: *Picture shows a boy recovering his belongings from his home in Bhaktapur, Nepal.* – PHOTO: REUTERS

Could the earthquake in Nepal have been predicted?

Geologists can map the structures on the Earth's surface and determine the distribution of earthquakes at depth. They can then predict where future earthquakes are likely to go off, but cannot predict exactly when. Before the Nepal earthquake, there was a big seismic gap (roughly centred around Kathmandu) that had not experienced a big earthquake for 80 years since the devastating one in 1934 in eastern Nepal-Bihar. Kathmandu is built on an old lake bed that runs across the entire Valley. Seismic waves would transform the sediment into a liquid-like substance, which would cause intense shaking by surface waves, similar to the earthquake that devastated Mexico City in 1985.

In *Colliding Continents*, you write that the Himalayan range came into being through a series of earthquakes.

As continental plates collide, the rocks are shortened by folding and thrusting. When the rocks break along a fault, earthquakes release the built-up stress. During large earthquakes, the rocks can move 5 or even 10 meters instantly. The Himalayas were formed by a series of earthquakes such as these.

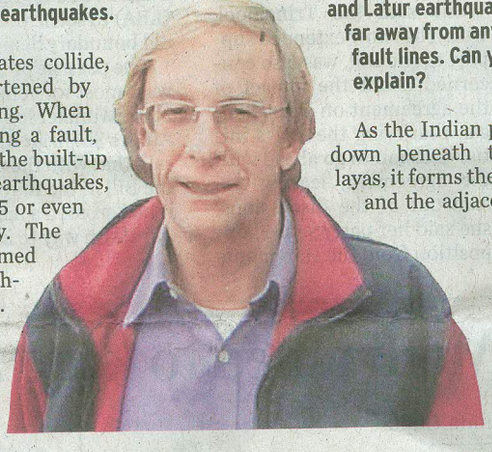

Has the height of the mountains altered after this earthquake?

The mountains may have risen above the thrust fault, but it is not possible to accurately quantify this. After 25 years of continuous GPS, we know the horizontal motions very accurately, but vertical motions are more difficult to quantify. Satellite radar interferometry data suggests that the land surface rose one meter to the north of Kathmandu.

Has this earthquake impacted the flow of rivers?

No, the course of rivers takes longer to change. Rivers started flowing south as soon as the Himalayas started rising, probably over 40 million years ago. As the Himalayas rise, the rivers will cut back by headwall erosion. Some larger rivers like the Arun have cut a long way north beyond the main Himalayan axis.

Although a majority of the earthquakes occur on the fault line, the Bhuj and Latur earthquakes were far away from any active fault lines. Can you explain?

As the Indian plate flexes down beneath the Himalayas, it forms the great arch and the adjacent Siwalik basin, along which the Ganges flows. The Bhuj earthquake may have been related to this large-scale flexure, but it is not certain.

Please explain the geological blueprint of this earthquake.

The Indian Plate collided with Asia about 50 million years ago, closing the Tethys Ocean that lay between. India has since continued to push north into Asia, under-thrusting the Himalayas and pushing the mountains up. The Nepal earthquake is the latest in a series of such events that are caused by thrust faulting on the interface between the down-going Indian plate and the rising Himalayas. The active thrust fault dips about 5-10 degrees to the north of the Himalayan front. The earthquake depth, about 15 km beneath the Gorkha region, was on this rupture. The earthquake ruptured about 120 km length of the fault from the Gorkha region eastward. The maximum amount of slip along the fault that ruptured may have been 4-5 meters but the fault did not break to the surface.

The region is still experiencing tremors.

Big earthquakes will have many aftershocks; some of extremely large magnitude, even 6, can be expected. Small aftershocks are likely to continue for weeks, months, even a year afterwards, as the plates readjust. It is possible that about 5 meters of slip may have resulted at 15 km depth on this earthquake. The fault does not seem to have ruptured the surface, so the strain may still be greater at depth. There is potential for an increased number of smaller earthquakes in the region to the south of Pokhara and Kathmandu, where the fault rises towards the surface and also to the west of the epicentre from Gorkha to Pokhara along the axis of the Himalayas.

Kathmandu was badly hit because it is built on old lake sediments which are highly susceptible to shaking
- Michael P. Searle

Geographically how far and wide were the consequences of the earthquake felt?

The earthquake epicentre was beneath Gorkha-Lamjung. The fault appears to have ruptured eastwards for nearly 120 km. The damage was worse in the regions of the quake, in the Gorkha-Lamjung region, the Burhi Gandaki valley and Ganesh Himal. Kathmandu was badly hit because it is built on old lake sediments that are highly susceptible to shaking. Videos of the time the earthquake went off show waves passing over the surface almost like an ocean wave. The devastating rockfalls and avalanches in Langtang and Everest were caused by the earthquake shaking loose rocks high up on very steep slopes.

Are you aware of potentially dangerous activities taking place over geologically unstable areas connected to the fault lines in Asia?

Certainly. Two years ago I visited a valley in eastern Tibet in Sichuan province where Kangding was devastated by an earthquake. At Kangding, the Chinese have rebuilt an entire city with 20-storey buildings right along the same active fault (Xianshui-he fault). Kangding is another disaster waiting to happen.

Will an earthquake always be viewed as a natural disaster by society at large?

The quote geodesists like to use is "earthquakes don't kill people, buildings do". We have to learn to live with earthquakes. People in countries like Japan, California and Taiwan already do. Buildings are built to sway and can withstand magnitude 5 or 6 quakes without damage. Nepal, Pakistan and other countries always have far more deaths during earthquakes mainly due to poor infrastructure.

(Shubhangi Swarup is a freelance journalist based in Mumbai.)

News item/letter/article/editorial published on 7/5/15 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)
Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald
M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

। नवभारत टाइम्स । नई दिल्ली ।गुरुवार, 7 मई 2015 www.delhi.nbt.in

एनजीटी के आदेशों की खुलेआम अनदेखी

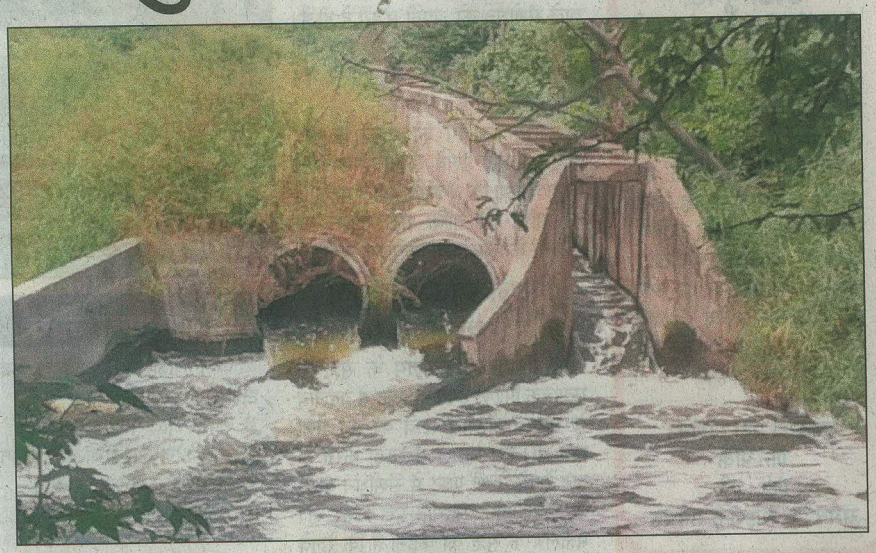

पॉल्यूशन रोकने पर न प्रशासन गंभीर न जनता

■ प्राची, नई दिल्ली

यमुना को मैली से निर्मल बनाने और एयर पॉल्यूशन को कम करने के मकसद से नैशनल ग्रीन ट्रिब्युनल (एनजीटी) ने तमाम अहम आदेश जारी किए, लेकिन उन आदेशों के प्रति न तो आम जनता सचेत है और न ही प्रशासन की सतर्कता नजर आ रही है। इसीलिए बैन के बावजूद ओपन बर्निंग भी जारी है और यमुना में गंदे पानी का बहाव भी।

ओखला एसटीपी से प्रॉब्लम

यमुना से पॉल्यूशन कम करने के लिए एनजीटी ने इसी साल 13 जनवरी को जो निर्देश जारी किए उन्हें पूरा करने के लिए सरकार व पब्लिक अथॉरिटीज को साल 2017 का टारगेट दिया है। लेकिन अभी तक जो कोशिशें हैं, उससे यह मकसद अपन लक्ष्य से कोसों दूर नजर आ रहा है। सबूत के तौर पर मथुरा रोड पर स्थित ओखला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) को ही ले लीजिए। राजधानी के सबसे बड़े एसटीपी से निकलने वाला गंदा पानी सीधे यमुना में जाकर गिर रहा है। सरिता विहार निवासी केतन आजाद की पड़ताल में यह खुलासा हुआ। उन्होंने बताया कि कालिंदी कुंज घाट के पास यमुना में एक नाला गिरता है, जो जसोला गांव और शाहीन बाग के बीच से होता हुआ वहां आ रहा है। उसी नाले में ओखला सीवेज ट्रीटमेंट के तीन नालों का पानी भी आ रहा है। एसटीपी से आ रहे पानी की क्वॉलिटी तस्वीरों से साफ है। जबकि एनजीटी ने आदेश में कहा था कि राजधानी में मौजूद सभी एसटीपी पूरी क्षमता के साथ 24X7 चालू होने चाहिए, ट्रीटमेंट प्लांट से निकलने वाले पानी की क्वालिटी चेक होनी चाहिए और साफ पानी को ही यमुना में बहाये जाने की इजाजत होनी चाहिए। ट्रिब्युनल ने जल बोर्ड व अन्य संबंधित अथॉरिटीज को इस काम के लिए एक महीने का समय दिया था, लेकिन आदेश के चार महीने बाद भी हालात वैसे ही हैं।

बेअसर आदेश !

- यमुना में पॉल्यूशन बढ़ा रहा है ओखला सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट
- ग्रीन कोर्ट के तमाम आदेशों के बाद भी नहीं रुक रही ओपन बर्निंग
- नाम के लिए ढके जा रहे है कंस्ट्रक्शन मटीरियल से भरे ट्रक

कचरे के ढेर की यह तस्वीर नॉर्थ ईस्ट दिल्ली के पुश्ता रोड की है, जहां यमुना किनारे गंदगी डाले जाने के साथ खुले में कचरा जलाया जा रहा है

बेधड़क धूल उड़ा रहे हैं ट्रक

एयर पॉल्यूशन के मद्देनजर एनजीटी ने बीते महीने ही एक आदेश जारी किया था जिसमें डस्ट (धूल) से होने वाले पॉल्यूशन को कम करने के लिए कुछ अहम निर्देश जारी किए गए थे। उसमें से एक आदेश उन ट्रकों के संबंध में था जो कंस्ट्रक्शन मटीरियल ढोते हैं। ट्रिब्युनल ने ट्रकों के कंस्ट्रक्शन मटीरियल खासतौर पर रेत ढोते हुए कवर किए जाने को जरूरी कर दिया था। पर तस्वीर से साफ है कि ट्रक वालों को उस नियम का कितना ख्याल है। आईएसबीटी से वजीराबाद की ओर जाते इस ट्रक में रेत भरी हुई है और उस पर जो कवर डाला था, उससे पूरा ट्रक कवर नहीं हो रहा था, जिसकी वजह से सारा रेत हवा में उड़ रहा था।

Central Water Commission
Technical Documentation Directorate
Bhagirath(English)& Publicity Section
****

725(A), North,Sewa Bhawan,
R.K. Puram, New Delhi – 66.

Dated 7/5/15

Subject: Submission of News Clippings.

The News Clippings on Water Resources Development and allied subjects are enclosed for perusal of the Chairman, CWC, and Member (WP&P/D&R/RM), Central Water Commission. The soft copies of clippings have also been uploaded on the CWC website.

Assistant Director (publicity)

Encl: As stated above.

Editor, Bhagirath (English) & Publicity

Director (T.D.)

For information of Chairman &Member (WP&P/D&R/R.M.), CWC and all concerned, uploaded at www.cwc.nic.in

1
Covering L., YIS